अध्याय 5

राजस्थान के लोक नृत्य

लोक

लोक शब्द में किसी क्षेत्र विशेष तथा वहाँ रहने वाले स्थानीय लोग दोनों का भाव अंतर्निहित है। मनुष्य आदिम काल से ही एक सामाजिक प्राणी है तथा लोक शब्द भी अत्यंत प्राचीन है। अतः लोक शब्द एक आदर्श व सुगठित समाज तथा क्षेत्र के संदर्भ में प्रचलित है। यह अंग्रेजी के 'Folk' शब्द का रूपान्तरण है। लोक जीवन में मनुष्य स्वप्रेरणा से सामूहिक कल्याण के लिये कुछ बंधन भी स्वीकार कर लेता है। लोकसाहित्य, लोककलाओं व लोक जीवनशैली द्वारा इसे आसानी से समझा व अनुभूत किया जा सकता है।

लोक संगीत

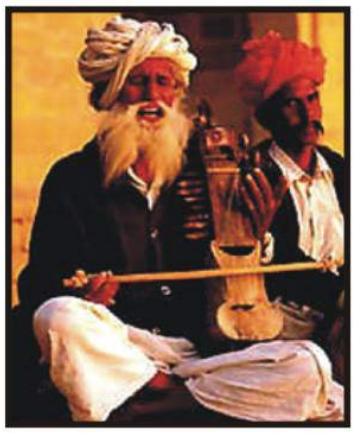

आदिकाल से मनुष्य के आनंद की सार्वभौमिक भाषा संगीत रही है। लोकजीवन में व्यक्तिगत अथवा सामूहिक रूप से, लोकजीवन के विविध सुख–दुःख, संयोग–वियोग–आवेग, आनंद आदि अनुभूतियों व परंपरा, त्यौहार, उत्सव, संस्कार आदि अवसरों पर की जानेवाली सुरमयी अभिव्यक्ति लोकसंगीत है।

लोकसंगीत में किसी नियमित प्रशिक्षण तथा शास्त्रीय अध्ययन की विशेष आवश्यकता नहीं होती है। यह परंपरा से एक पीढ़ी द्वारा दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होता आया है। कालक्रम से आवश्यकतानुसार इनमें परिष्कार व परिवर्तन होते रहते हैं। लोकसंगीत किसी क्षेत्र या समाज का सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व करता है। माधुर्य, सरसता व स्वाभाविकता लोकसंगीत के विशेष गुण हैं।

लोकसंगीत के तीन अंग– लोकगीत, लोकवाद्य व लोकनृत्य हैं। लोक जनजीवन में भावनाओं की शाब्दिक

अनुभूति व उसकी स्वरमयी अभिव्यक्ति लोकगीत हैं। लोकगीतों की स्वर व ताल युक्त प्रस्तुति को लोकवाद्य और अधिक प्रभावी व आकर्षक बनाते हैं, तथा भावनाओं का तीव्र प्रवाह, जिसमें आनंद, उमंग, उत्साह से अभिभूत व मस्त होकर लयबद्ध अंग संचालन होता है, लोकनृत्य कहलाता है।

लोकनृत्य

मानव का मूल स्वभाव है कि किसी भी प्रकार की सफलता प्राप्त होने पर अनायास खुशी/प्रसन्नता को प्रकट करता है। यह प्रसन्नता, उत्साह व उमंग जब लयबद्ध अंग–संचालन के रूप में व्यक्त होता है तो लोकनृत्य कहलाता है। रीति–रिवाज, परंपरा, त्यौहार, उत्सव, संस्कार व प्राकृतिक तथा सामाजिक कारक लोकनृत्य के प्रस्तुतिकरण व भिन्नता को प्रभावित करते हैं तथा ये ही कारण मानव मन में आनंद व उन्मत्तता का संचार कर लोकनृत्य के प्रस्फुटन को प्रेरित करते हैं।

लोकनृत्य जीवन का अनिवार्य अंग हैं, ये मनुष्य के मानसिक, शारीरिक व सामाजिक स्वास्थ्य को संतुलित रखते हैं तथा सहज जीवन की आनंदानुभूति का स्त्रोत बन जाते हैं। इनके प्रशिक्षण की कोई विशेष आवश्यकता नहीं होती है। स्वाभाविकता, इनका गुण है। आनंद अनुभुति की यह सहज प्रस्तुति सामुदायिक भावना से ओत–प्रोत शास्त्रीय बंधनों से मुक्त व स्वतंत्र होती है।

राजस्थान के लोकनृत्य

राजस्थान के लोकनृत्य अत्यंत सुंदर, आकर्षक, परिष्कृत व अलंकृत हैं। गीत, ताल, स्वर व लय के साथ आकर्षक भाव–भंगिमा, वेशभूषा आदि का संतुलित समन्वय इनमें दिखाई देता है। व्यक्तिगत आनंद अनुभूति तो प्रायः प्रत्येक श्रेणी के नृत्य का गुण हैं ही । इसके अलावा जाति विशेष के नृत्य, सामाजिक नृत्य, क्षेत्र विशेष के नृत्य, अवसर विशेष पर प्रस्तुत होने वाले नृत्य, व्यावसायिक नृत्य आदि अनेक श्रेणियों के अन्तर्गत इन लोकनृत्यों को समझा जा सकता है।

जाति विशेष के नृत्य

इन नृत्यों में राजस्थान की विशिष्ट जातियों में प्रचलित नृत्य हैं जिनमें – भील, मीणा, सहरिया, गरासिया, कामड़, कंजर, गुर्जर, कालबेलिया आदि जातियों में प्रचलित नृत्य हैं।

क्षेत्र विशेष के नृत्य

इस श्रेणी में कोई क्षेत्र विशेष एक नृत्य की पहचान बन जाता है – जैसे बाड़मेर का गैर नृत्य, जालौर का ढोल नृत्य, भरतपुर का बम नृत्य, करौली का लांगुरिया नृत्य, शेखावटी का गींदड़ नृत्य, नाथद्वारा का डांग नृत्य आदि प्रमुख हैं।

व्यावसायिक लोकनृत्य

कुछ लोकनृत्य व्यावसायिक दृष्टि से अत्यंत सफल, प्रचलित व पेशेवर श्रेणी के हैं जिन्हें सर्वत्र पहचान प्राप्त हुई है तथा दर्शकों द्वारा पसंद किये जाते हैं। ये नृत्य राजस्थान की वैश्विक पहचान व कलाकारों को आर्थिक संबल प्रदान करते हैं। इनमें – तेराताली, भवई, कच्छी घोड़ी आदि हैं।ये नृत्य जातिगत श्रेणी अथवा क्षेत्र विशेष के साथ–साथ उच्च व्यावसायिक श्रेणी का प्रतिनिधित्व करते है, उदाहरण– कालबेलिया नृत्य ।

प्रस्तुत अध्याय में राजस्थान के पारंपरिक तीन प्रमुख लोकनृत्यों का परिचय दिया जा रहा है जिनमें – घूमर, तेराताली, व चरी नृत्य हैं। इन नृत्यों ने राजस्थान को विश्व स्तर पर विशेष पहचान प्रदान की है।

(1) घूमर नृत्य

घूमर नृत्य राजस्थान का सर्वाधिक प्रचलित व राजस्थान की पहचान के तौर पर जाना जाता है। घूमर का अर्थ होता है – घूमना। इस नृत्य में दांए व बांए दोनों ओर घूमने से लहंगे का आकर्षक घेर बनता है। इस दौरान हाथों का लचकदार संचालन, कलाइयों व उंगलियों का कमनीय घुमाव व घूमने के दौरान झुकते हुए पुनः ऊपर उठने का ढंग अत्यंत प्रभावी होता है। नृत्यांगनाऐं पतला घूंघट डाले आकर्षक पारंपरिक लहंगा, चूनर, कांचली कुर्ती पहनकर विवाह, त्यौहार, उत्सव, मंच,राजकीय आयोजनोंव विद्यालयी कार्यक्रमों, प्रत्येक जगह, प्रत्येक अवसर पर घूमर नृत्य करती हैं।

इस नृत्य का ओज, परिधान व आकर्षक अलंकृत भाव–भंगिमाऐं राजपूताने की दरबारी संस्कृति का बोध कराती है। मूलतः राजस्थान की संस्कृति में तथा राजपूत रीति–रिवाजों में महिलाऐं घूंघट डालकर पारिवारिक अवसरों पर नृत्य करती हैं तथा भाव–भंगिमाओं में एक विशिष्ट सांस्कृतिक ओज के साथ ही अपनी नजाकत व कमनीयता को दर्शाती हैं।

नृत्य की वेशभूषा अत्यंत आकर्षक, गहरे चटक रंगों के वस्त्रों पर गोटा, तारी आदि के कार्य से सुसज्जित होती है। बोर, झूमके, नथ, पायल, रखड़ी, हार आदि आभूषण व हाथों व पाँवों में मेंहदी का शृंगार नृत्य की शोभा बढ़ा देते हैं।

नृत्य के दौरान शहनाई, ढोल, नगाड़ा, थाली आदि वाद्यों के साथ कहरवा ताल एक विशेष चाल में बजाई जाती है जिसे ''सवाई चाल'' या ''घूमर'' कहते हैं।इस दौरान घूमर का प्रसिद्ध गीत प्रचलित है जो राग सारंग के एक प्रकार (राग जलधर सांरग– कोमल ग़ व शुद्ध ध युक्त, ताल कहरवा) में बद्ध है–

ओ म्हारी घूमर छै नखराली ए माँ, घूमर रमवा म्हैं जास्यां
म्हानै राठौड़ा री बोली प्यारी लागै ए माय, घूमर रमवा म्हैं जास्यां
म्हानै रमतां नै लाडूड़ौ ल्यादो ए माय, घूमर रमवा म्हैं जास्यां
म्हानै परदसां मत दीजौ ए माय, घूमर रमवा म्हैं जास्यां

इसमें स्थान विशेष के साथ अन्य बन्द/पंक्तियाँ भी प्रचलित है। इस प्रमुख गीत के अलावा इसी ताल पर प्रचलित अन्य गीत भी घूमर नृत्य के दौरान प्रयुक्त किये जाते हैं। जिनमें –

- **सागर पाणी भरबा जाऊं सा, निजर लग जाय**
- **जला रे मूं तो राज रा डेरा निरखण आई**
- **म्हारी सवा लाख री लूम गम गई ईंडोणी**
- **कुणजी खुदाया कुआ बावड़ी.....आदि गीत प्रचलित हैं।**

राजस्थान की परिस्थितियों में यह नृत्य अत्यंत पल्लवित हुआ है तथा अन्य लोकनृत्यों पर भी घूमर का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। घूमर की प्रस्तुति में भी अन्य लोकनृत्यों का मिश्रण किया जाने लगा है।

(2) चरी नृत्य

सिर पर चरी अथवा कलश भारतीय संस्कृति में शुभ सूचक माना जाता है, प्रज्ज्वलित अग्नि, दैवीय ऊर्जा का स्वरूप व पवित्रता का प्रतीक है। चरी नृत्य का चलन भी विवाह आदि शुभ अवसरों पर इन शुभ प्रतीकों के साथ नृत्य व आनंद का प्रदर्शन कर अवसर को और अधिक रंजक व कलात्मक बनाता रहा है। मूलतः गुर्जर जाति में किया जाने वाला यह नृत्य आज सर्वत्र प्रचलित है। गुर्जर लोग चरी का उपयोग दूध निकालने व उससे संबंधित कार्यों हेतु करते हैं।

नृत्यांगनाऐं चरी में कपास के बीज (काकड़े) जलाकर, चरी को सिर पर रखकर नृत्य करती हैं। सिर पर प्रज्ज्वलित अग्नि का दृश्य दर्शकों में प्रभाव उत्पन्न करता है। 6 से 10 महिलाओं का समूह घूमर नृत्य की आंशिक मुद्राओं के साथ, आकर्षक मुद्राओं, संरचनाओं व दृश्यों का निर्माण करता है। इस दौरान वृत्त के अंदर–बाहर निकलना, सीधी, आड़ी, तिरछी रेखाओं का निर्माण, बैठकर, लेटकर चरी का संतुलन बनाए रखना आकर्षण व प्रभाव उत्पन्न करते हैं।

पुरुष ढोल, थाली, बांकिया आदि वाद्यों से संगत करते हैं। कई बार बिना गीत के ही केवल वाद्यों की ध्वनि पर ही नृत्य कर लिया जाता है तो कभी कहरवा (घूमर चाल) के ही विविध गीतों पर प्रस्तुति होती है। किशनगढ़ का नाम इस नृत्य के नाम से भी जाना जाता है। फलकू बाई ने इस पारंपरिक नृत्य को पेशेवर तथा मंचीय प्रस्तुति के रूप में स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इस दौरान घूमर नृत्य के प्रसिद्ध गीत–

- **सागर पाणी भरबा जाऊं सा, नजर लग जाय**
- **ओ म्हारी घूमर छै नखराली ए माँ, घूमर रमवा म्हैं जास्या**
- **जला रे मूं तो राज रा डेरा निरखण आई**
- **कुणजी खुदाया कुआ बावड़ी**.....आदि अनेकों गीत प्रचलित हैं।

(3) तेराताली नृत्य

राजस्थान के लोक देवी–देवताओं में रामदेव जी का प्रमुख स्थान है। रामदेव जी के भोपे 'कामड़' कहलाते हैं। ये हाथ में तंबूरा/वीणै तथा मंजीरा, ढोलक की संगति देकर रामदेव जी के गीत गाते हैं तथा महिलायें नृत्य करती हैं। नृत्य के दौरान मंजीरे की निरन्तर टंकार से वातावरण में एक विचित्रता छा जाती है। मंजीरा और तेराताली का अद्‌भुत संयोग नृत्य में दिखाई देता है।

नृत्यांगनाऐं तेरह मंजीरों में से 9 को दायें पाँव पर बांधती हैं, दो मंजीरे कोहनी के ऊपर तथा दो कंधों पर बांधती हैं। इन 13 मंजीरों को, दो अन्य मंजीरे (जो हाथ में लिये होते हैं, उन्हें घूमाते हुए) से टकराकर लय व ताल के वैचित्र्य दर्शाती है। इस दौरान टन, टन, टन टन की बहुरंगी ध्वनि मन को आल्हादित करती रहती है। सिर पर थाल में कलश रखकर मुँह से तलवार पकड़ती हैं तथा बैठकर, लेटकर, पाँव फैलाकर आदि विविध स्थितियों में मंजीरों को लगातार टकराकर मनोरम वातावरण सृजित करती हैं। कभी–कभी ऊंगलियों पर थाली को लगातार घूमाकर भी प्रदर्शन करती हैं। यह नृत्य 1 से 5 नृत्यांगनाऐं अर्थात एकल तथा सामूहिक दोनों रूपों में होता है।नृत्य में पारंपरिक पोषाक व आभूषण पहने जाते हैं। रामदेव जी के सैंकड़ों गीत, प्रचलित हैं।

सर्वाधिक प्रचलित गीत –

अरे हे, रूणिचे रा धणियां, अजमाल जी रा कंवरा
माता मेणादि रा लाल, राणी नेतल रा भरतार
म्हारो हेलो सुणो जी रामा पीर
घर–घर होवे पूजा थारी, गांव–गांव जस गावे जी ।
जो कोई लेवे नाम पीर को, मन चाह्यां फल पावे जी।
ओ राम सा पीर थारी, धूणीं पे धोक लगावां,
मनड़ा रा फूल चढ़ावा ।।

मरतोड़ा ने जीवदान दो जीता ने वरदान जी ।
थारी शरण में आयोड़ा ने मिलै अभय वरदान जी।
महिमा अपरंपार थारी, धन–धन भाग विधाता,
ओ घणी खम्मां अनदाता ।।

इसके अतिरिक्त – **पश्चिम दिशो सूं म्हारा रामजी पधार्‌या**––– आदि गीत भी प्रचलित हैं। पारंपरिक, आध्यात्मिक व क्षेत्रीय श्रेणी का नृत्य आज पेशेवर या व्यावसायिक दृष्टि से भी अत्यंत प्रचलित है। विदेशी लोग भी इसका प्रशिक्षण प्राप्त कर प्रदर्शन कर रहे हैं। पोकरण में रामदेव जी की समाधि स्थित है, पोकरण क्षेत्र कामड़ लोगों के लिए विशेष महत्त्व का स्थान है।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

- लोक शब्द अंग्रेजी के शब्द 'FOLK' का रूपांतरण हैं। इसमें किसी क्षेत्र तथा लोक दोनों का भाव निहित है।
- सदियों से लोक संगीत की त्रिवेणी धारा (गायन, वादन, नृत्य) प्रवाहित होती रही है।
- लोक जीवन में किसी भी प्रकार की प्रसन्नता की लयबद्ध अंग संचालन युक्त अभिव्यक्ति 'लोकनृत्य' कहलाती है।
- राजस्थान के लोकनृत्य अत्यंत सुंदर, आकर्षक व परिष्कृत हैं।
- राजस्थान में जातिगत, क्षेत्रीय व व्यावसायिक श्रेणी के नृत्यों की वृहद श्रृंखला है।
- 'घूमर' सर्वाधिक प्रचलित, नृत्य है। यह राजस्थान का आदर्श नृत्य व रजवाड़ी शान का प्रतीक है।
- घूमर में घूमने के दौरान हाथों व कलाइयों का लचकदार संचालन व घूमते हुए झुककर उठना विशेष आकर्षक मुद्राऐं हैं।
- 'कामड़' जाति की महिलायें, 13 मंजीरों को हाथों व पाँवों में बांधकर, लोक देवता रामदेव जी के गीतों पर तेराताली नृत्य करती हैं।
- मंजीरे की लयात्मक टन् – टन् – टन् आवाज़ तेराताली नृत्य का विशेष वैभव है।
- किशनगढ़ का चरी नृत्य गुर्जर जाति का प्रचलित नृत्य है। सिर पर चरी में अग्नि जलाकर आकर्षक मुद्राओं में यह नृत्य प्रस्तुत किया जाता है।
- फलकू बाई को चरी नृत्य की मंचीय प्रस्तुति में योगदान के लिये जाना जाता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

बहुवैकल्पिक प्रश्न

1. निम्न में से लोकनृत्य है ?
   (अ) भरतनाट्यम (ब) कथक (स) तेराताली (द) ओडेसी
2. राजस्थान की पहचान व रजवाड़ी संस्कृति का प्रतीक नृत्य कौनसा है ?
   (अ) तेराताली (ब) कालबेलिया (स) घूमर (द) अग्नि नृत्य
3. तेराताली नृत्य के गीत किस लोक देवता पर आधारित होते हैं ?
   (अ) पाबू जी (ब) रामदेव जी (स) तेजाजी (द) राणी सती
4. 'कामड़' लोगों का संबंध किस नृत्य से है ?
   (अ) तेराताली (ब) घूमर (स) चरी (द) गैर नृत्य
5. घूमर नृत्य में किस ताल का प्रयोग होता है ?
   (अ) कहरवा (ब) दादरा (स) रूपक (द) झपताल
6. चरी नृत्य का संबंध किससे है ?
   (अ) गुलाबो (ब) अल्लाजिलाई बाई (स) मांगी बाई (द) फलकू बाई

7. चरी नृत्य में अग्नि जलाने हेतु प्रयोग में लिये जाते हैं ?
   (अ) लकड़ी के टुकड़े (ब) जलते हुए कोयले (स) कपास के बीज, काकड़े (द) कपड़े
8. तेराताली नृत्य में किस वाद्य का विशेष प्रयोग होता है ?
   (अ) ढोलक (ब) मंजीरा (स) खड़ताल (द) नगाड़ा
9. चरी नृत्य का संबंध मूलतः किस स्थान से माना जाता है ?
   (अ) किशनगढ़ (ब) चित्तौड़गढ़ (स) कुशलगढ़ (द) नवलगढ़
10. ''घूमर रमबा म्हैं जास्यां'' गीत किस राग पर आधारित है ?
    (अ) देस (ब) भैरव (स) यमन कल्याण (द)सारंग का प्रकार

लघुत्तरात्मक प्रश्न

1. लोकनृत्य किसे कहते हैं ?समझाइये ।
2. 'राजस्थान के लोकनृत्य' पर टिप्पणी लिखिए।
3. 'घूमर नृत्य' में प्रयुक्त किया जाने वाला कोई गीत लिखिए।
4. 'तेराताली' नृत्य का परिचय दीजिये।
5. चरी नृत्य का प्रदर्शन किस प्रकार किया जाता है?उल्लेख कीजिए।
6. ''घूमर नृत्य राजस्थान की पहचान है।'' कथन की व्याख्या कीजिए।
7. तेराताली व घूमर नृत्य में वाद्यों के प्रयोग का तुलनात्मक विवरण दीजिए।

उत्तर बहुवैकल्पिक प्रश्न

(1) स (2) स (3) ब (4) अ (5) अ (6) द (7) स (8) ब (9) अ (10) द

शिक्षकों हेतु अनुदेश

- लोक व शास्त्रीय नृत्य अंतर को व्यावहारिक तौर पर स्पष्ट करावें।
- राजस्थान के लोक नृत्यों व अन्य प्रदेश के लोक नृत्यों की वेशभूषा, मुद्राऐं, वाद्य प्रयोग आदि की चर्चा करें।
- विद्यालयी कार्यक्रमों में लोकशैली की प्रस्तुति व प्रतियोगिता करावें।